Golden Research Thoughts
ISSN 2231-5063
Impact Factor : 2.2052 (UIF)
Volume-4 | Issue-5 | Nov-2014 Available online at www.aygrt.isrj.org

आर्थिक सेवाओं की समन्वित ग्रामीण विकास में भूमिका जनपद गाजीपुर (उ.प्र.) का एक प्रतीक अध्ययन

अजीत कुमार यादव

प्राचार्य, गुरूकुल महाविद्यालय पत्थलगांव जिला–जशपुर (छ.ग.)

सारांश — प्रस्तुत शोध प्रपत्र में गाजीपुर जनपद के समन्वित ग्रामीण विकास में आर्थिक सेवाओं की भूमिका का अध्ययन किया गया है। अध्ययन क्षेत्र मध्य गंगा मैदान के समतल एवं उपजाऊ भूमि में स्थित है। यहां सर्वत्र सेवा केन्द्रों के विकास के लिये उपयुक्त भौगोलिक एवं सांस्कृतिक परिस्थितियां उत्तरदायी है। क्षेत्र के चयनित सेवा केन्द्रों पर आर्थिक सेवाओं का वितरण असमान रूप में पाया जाता है। क्षेत्र के नगरीय क्षेत्रों में स्थित सेवा केन्द्रों पर परिवहन, बैंकिंग एवं औद्योगिक क्रियाकलापों के विकसित होने से आर्थिक सेवाओं की प्रधानता एवं ग्रामीण व दूरवर्ती छोटे सेवा केन्द्रों पर आर्थिक सेवाओं की कमी क्षेत्रीय विकास प्रतिरूप के लिए उत्तरदायी हैं। क्षेत्र में आर्थिक सेवाओं की भूमिका मध्यवर्त्ती भाग में अतिउच्च श्रेणी का एवं दक्षिणी–पूर्वी व उत्तरी–पूर्वी भाग में आर्थिक सेवाओं के सीमित वितरण के कारण समन्वित ग्रामीण विकास में आर्थिक सेवाओं की भूमिका न्यून श्रेणी की हैं।

प्रस्तावना-

सेवा केन्द्र वस्तुओं एवं सेवाओं के वितरण नवाचारों के प्रचार एवं विभिन्न प्रकार के विचारों के प्रसार केन्द्र होते हैं। इसलिए किसी क्षेत्र के सर्वांगीण विकास में अपना योगदान देने में सक्षम होते हैं। किसी भी क्षेत्र के अर्थतंत्र एवं सामाजिक संरचना को संचालित करने में इनका बिन्दुवत वितरण महत्वपूर्ण स्थान रखता हैं। इनकी उत्पत्ति एवं भौगोलिक स्थिति आर्थिक क्षेत्र को पुनर्गठित करने में सहायक सिद्ध होती है। इस

प्रकार सेवा केन्द्र विभिन्न पदानुक्रम वर्ग में अपना आर्थिक क्षेत्र विकसित करके सामाजिक–आर्थिक और संस्थागत संरचना को रूपान्तरित करने में सक्षम होते हैं। यही कारण है कि सेवा केन्द्र समन्वित ग्रामीण विकास में आधारीय भूमिका का निर्वहन करते हुए क्षेत्र को नेतृत्व प्रदान करते हैं, (पाण्डेय,1985)[1] ।

सेवा केन्द्र ऐसे स्थल होते हैं जो कि आधुनिकीकरण एवं निम्न स्तर के अधिवासों के प्रतिरूप के सांद्रण को जन्म देने वाली आर्थिक एवं सामाजिक नीतियों के रूप में उपयोग किये जाते हैं। किसी भी क्षेत्र के सामाजिक–आर्थिक एवं समन्वित ग्रामीण विकास में सेवा केन्द्र ध्रुवीय भूमिका निभाते हैं। स्पष्ट है कि क्षेत्र के त्वरित व संतुलित विकास में सेवा केन्द्रों का आधारीय योगदान होता है। क्षेत्रीय विकास की संकल्पना सार्वभौम रूप से सत्य है कि उसके विकास में सेवा केन्द्रों की महत्वपूर्ण भूमिका होती हैं, जहां पर सेवा केन्द्र वृहद स्तरीय एवं अधिक होते है, वहां पर क्षेत्रीय विकास अधिक एवं उच्चस्तरीय पाया जाता है, परन्तु जहां पर सेवा केन्द्र निम्नस्तरीय एवं कम पाये जाते हैं वहां पर क्षेत्रीय विकास का स्तर निम्न पाया जाता है, लेकिन जिन क्षेत्रों में वृहद एवं लघुस्तर के सेवा केन्द्र एक साथ पाये जाते हैं वहां पर क्षेत्रीय विकास का प्रतिरूप अपेक्षाकृत मध्यम स्तर का होगा। इसी तरह का श्रृंखलाबद्ध तन्त्र होने पर क्षेत्र में सेवा केन्द्रो के संन्दर्भ में स्थानिक एवं कार्यात्मक समन्वयन स्थापित होता है, (तिवारी, 1998)[2]। सेवा केन्द्र क्षेत्रीय महत्व के ऐसे केन्द्र होते हैं जो कार्यो को सम्पादित करते हुए प्राथमिक एवं द्वितीयक कार्यो की अपेक्षा तृतीयक व चतुर्थक क्रियाओं को सघनता से सम्पादित करते है तथा ग्रामीण विकास में इंजन की भांति कार्य करते हुए क्षेत्र को नेतृत्व प्रदान करते हैं। सेवा केन्द्र अपने अग्रगामी व पश्चगामी क्रियाओं द्वारा अपने प्रभाव क्षेत्र का निर्धारण करते हुए क्षेत्र को निरंतर सेवाएं प्रदान करने के लिए सदैव तत्पर रहते हैं, (मिश्रा,1971)[3]।

विधितंत्र– प्रस्तुत अध्ययन में आर्थिक सेवाओं के निर्धारण हेतु चयनित सेवा केन्द्रों पर बैंकिंग, संचार, परिवहन, औद्योगिक एवं सहकारी समितियों की सेवाओं के अध्ययन हेतु प्राथमिक आकडों का एवं विकासखण्डानुसार आर्थिक सेवाओं के लिए द्वितीयक आकडों का उपयोग किया गया है। आर्थिक सेवाओं की भूमिका के अध्ययन हेतु सांख्यकीय विधि के अन्तर्गत Z Score विधि से विकासखण्डानुसार निम्न विकास श्रेणियों में विभक्त कर उनका विष्लेषणात्मक एवं तुलनात्मक अध्ययन किया गया है।

अध्ययन क्षेत्र– गाजीपुर जनपद उत्तर प्रदेष एवं वाराणसी मण्डल के पूर्वी भाग में $25^0 19'$ से $25^0 54'$ उत्तरी अक्षांष एवं $83^0 4'$ से $83^0 58'$ पूर्वी देषान्तर के मध्य स्थित है। यह जनपद पूर्व में बिहार राज्य के बक्सर जनपद से, पष्चिम में जौनपुर, दक्षिण में चन्दौली, दक्षिण–पष्चिम में वाराणसी, उत्तर–पष्चिम में आजमगढ़, उत्तर में मऊ एवं

उत्तर–पूर्व में बलिया जनपद से घिरा हुआ है। जनपद का कुल भौगोलिक क्षेत्रफल 3,377 वर्ग किमी. है, जो राज्य के कुल भौगोलिक क्षेत्रफल का 1.5 प्रतिषत है। इस जनपद की पूर्व–पष्चिम की ओर लम्बाई 89 किमी. एवं उत्तर–दक्षिण की ओर चौड़ाई 59 किमी. है। प्रषासनिक दृष्टिकोण से गाजीपुर जनपद 5 तहसीलों, 16 विकासखण्डों, 193 न्यायपंचायतों, 1050 ग्रामपंचायतों, 3364 ग्रामों (2665 आबाद ग्राम एवं 699 गैर आबाद ग्राम) में विभक्त है। 2011 की जनगणना के अनुसार जनपद की कुल जनसंख्या 36,22,727 है, जिसमें 18,56,584 पुरूष एवं 17,66,143 महिलायें हैं। यहां का औसत जनघनत्व 1072 व्यक्ति/वर्ग किमी., साक्षरता 74.27% एवं लिंगानुपात 951 है।

समन्वित ग्रामीण विकास की प्रक्रिया में सेवा केन्द्रों में पदानुक्रम पाया जाता है, जो लघु ग्रामीण केन्द्रों से लेकर सर्वाधिक बड़े केन्द्रों तक प्राप्त होते हैं। ग्रामीण विकास के अन्तर्गत नयी संस्थाओं के निर्माण के साथ ही संस्थागत सुविधाओं के उपयोग हेतु ग्रामीण जनसंख्या में विकास परख सामाजिक मूल्यों का विकास आवष्यक है। समन्वित ग्रामीण विकास के अन्तर्गत कृष्येतर क्रियाकलापों में वृद्धि सम्मिलित किया जाता है। उल्लेखनीय है कि विकास की इस जटिल प्रक्रिया में सेवा केन्द्र एक संस्था के रुप में कार्य करते हं तथा क्षेत्रीय उत्पादों के वितरण में इसकी भूमिका महत्वपूर्ण होती है। यही सेवा केन्द्र समन्वित ग्रामीण विकास में अहम् भूमिका अदा करते हैं, (सिंह,1997)[4] ।

भौगोलिक रूप मे सेवा केन्द्र और स्थानिक अन्तर्क्रिया, भू–वैन्यासिक संगठन के महत्वपूर्ण तत्व हैं। क्षेत्र में समन्वित ग्रामीण विकास के सन्दर्भ में इस भू–वैन्यासिक संगठन की सहायता से क्षेत्रीय समस्याओं एवं संभावनाओ का आंकलन करके उपयुक्त नियोजन प्रस्तावित किया जा सकता है। सेवा केन्द्रों के तन्त्र के विकास में उनके पारस्परिक अर्न्तसंबंध और उनके द्वारा प्रदत्त सेवाओं का महत्वपूर्ण स्थान है। इसलिए इनके पारस्परिक अन्तर्सम्बन्ध और प्रभाव क्षेत्र से होने वाली अर्न्तक्रिया के द्वारा सेवा केन्द्रों की विषिष्टताएं स्वतः स्पष्ट हो जाती है। प्रायः ऐसे सभी कार्य जो सम्पूर्ण क्षेत्र में विभिन्न केन्द्रस्थलो के बीच पारस्परिक अन्तर्सम्बन्ध स्थापित करते है, वे स्थानिक अन्तर्क्रिया के अन्तर्गत आते हैं, (उल्मैन,1954)[5]। उल्मैन ने दो स्थानों के मध्य स्थानिक अन्तर्क्रिया के मध्य कार्यात्मक गहनता को तीन तत्वों के आधार पर बताया है, जो इस प्रकार हैं–

1. **परिपूरकता**– किन्ही दो स्थानों के मध्य अन्तर्क्रिया तभी सम्भव होती है, जब एक स्थान पर मांग एवं दूसरे स्थान पर आपूर्ति की सुविधा हो।
2. **स्थानान्तरणषीलता**– इनसे तात्पर्य मार्ग की सुलभता एवं परिवहन के साधनों से है।
3. **मध्यस्थ अवसरों की कमी**– जब दो स्थानों के मध्य किसी मध्यस्थ अवसरों की कमी रहने पर कार्यात्मक सम्बद्धता उच्च स्तर की होती है। सेवा केन्द्र पारस्परिक अन्तर्क्रिया

Golden Research Thoughts
ISSN 2231-5063
Impact Factor : 2.2052 (UIF)
Volume-4 | Issue-5 | Nov-2014 Available online at www.aygrt.isrj.org

के परिणामस्वरूप विकसित होते हैं और अपने क्षेत्र के समन्वित ग्रामीण विकास में महत्वपूर्ण भूमिका अदा करते हैं।

सेवा केन्द्रों की समन्वित ग्रामीण विकास में भूमिका–

समन्वित ग्रामीण विकास में सेवा केन्द्रो की केन्द्रीय भूमिका होती है। इन्ही के माध्यम से ग्रामीण क्षेत्रों में सामाजिक–आर्थिक क्रियाओं को प्रोत्साहन मिलता है। अभिनव ज्ञान–विज्ञान की प्राप्ति और प्रयोग का संचरण होता है। सेवाओं के विकेन्द्रित–केन्द्रीयकरण की दृष्टि से इनकी महती उपादेयता है। वस्तुतः ये नवीनीकरण के केन्द्र हैं। ग्रामीण सेवा केन्द्रों का अभ्युदय स्थानीय एवं क्षेत्रीय आवष्यकताओं के अनुरूप होता है। ये अपनी स्थिति के कारण महत्वपूर्ण हो जाते है। इन सेवा केन्द्रों पर क्षेत्रीय एवं स्थानीय आवष्यकतानुरूप विभिन्न सेवाओं का विकास होता रहता है। इन्हीं सेवा केन्द्रों के द्वारा ग्रामीण जीवन के विभिन्न पक्ष निरन्तर प्रभावित होते हैं। सेवा केन्द्रों में विकास के कार्य के लिए निर्धारण विभिन्न कार्यक्रमों का संचालन तथा क्षेत्रीय आवष्यकताओ की पूर्ति होती है। ये सेवा केन्द्र अपने क्षेत्र के लिए श्रेयस्कर वातावरण के साथ ही रोजगार के नये अवसर प्रदान करते है एवं नगरीय प्रवास की प्रवृत्ति को रोकने में सहायक होते हैं। वस्तुतः सेवा केन्द्र अपने प्रषासनिक सीमा क्षेत्र एवं निकटवर्ती चतुर्दिक फैले क्षेत्रों के निवासियों को प्रत्यक्ष या परोक्ष लाभकारी प्रभाव प्रदान करने वाली एक प्रमुख अधिवासी इकाई है, (सिंह, 2007)[6] ।

समन्वित ग्रामीण विकास प्रक्रिया में सेवा केन्द्रों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। क्षेत्रीय स्तर पर भू–वैन्यासिक संगठन, स्थानीय उत्पादों के निर्यात की सुविधा विविध प्रकार की सेवाओं की उपलब्धि के साथ ही उच्च पदानुक्रम वाले सेवा केन्द्रों से प्राप्त नवीन प्रत्यार्वतनों को अपने सम्पूरक क्षेत्रों में प्रसारित करने में सेवा केन्द्रों का महत्वपूर्ण योगदान हैं। प्राथमिक उत्पादन प्रधान ग्रामीण क्षेंत्रो एवं द्वितीयक तथा तृतीयक उत्पादन प्रधान नगरीय केन्द्रों के मध्य अन्तर्क्रियात्मक सम्बन्ध स्थापित करने में सेवा केन्द्रों की दोहरी भूमिका होती है। अर्थात् एक ओर ग्रामीण सेवा केन्द्र कृषि उत्पादों को संकलित कर उनके पदानुक्रमीय विनिमय प्रणाली को प्रोत्साहित करते हैं तथा दूसरी ओर ग्रामीण निवासियों के लिए आवष्यक एवं कृषि पूरक ग्रामीण क्षेत्रों में वितरण हेतु सक्षम माध्यम प्रदान करते हैं। इस प्रकार कृषि विविधता एवं कृषि आधुनिकीकरण हेतु सेवाओं एवं सुविधाओं को प्रदान करने के साथ ही स्थानीय कृषि उत्पादन आधिक्य का तर्कसंगत विनिमय विवरण तथा विकास प्रक्रिया के नगरीय पूर्वाग्रह को नियमित करना सेवा केन्द्रों का प्रमुख कार्य होता है (यादव, 2008)[7]।

समन्वित ग्रामीण विकास सेवा केन्द्र सेवा सम्बन्धी कार्यों के अतिरिक्त विभिन्न प्रकार के सामाजिक– आर्थिक नवाचारों का प्रसार समीपवर्ती ग्रामीण अधिवासों को करते हैं, जिससे ग्रामीण उत्पादन संरचना में परिवर्तन होता है। परिणामस्वरूप क्षेत्र का

Golden Research Thoughts
ISSN 2231-5063
Impact Factor : 2.2052 (UIF)
Volume-4 | Issue-5 | Nov-2014 Available online at www.aygrt.isrj.org

सम्पूर्ण विकास भी संभव होता है। नवाचारों का प्रसार अधोमुखी प्रक्रिया से होता है। सेन[8] ने 1971 में आन्ध्र प्रदेष के मिर्यालगुदा तालुका में विकास की विचारधाराओं का व्यावहारिक प्रयोग किया। सुन्दरम[9] ने 1972 में सेवा केन्द्रों को ग्रामीण समुदाय के लिए प्रकाष बिन्दु मानते हुए उनकी सेवाओं एवं क्रियाकलापों यथा सामाजिक–आर्थिक, प्रषासनिक एवं सांस्कृतिक कार्यो को पारस्परिक मानते हुए दिल्ली प्रदेष के विषेष संदर्भ में अध्ययन किया। चन्द्रषेखर[10] ने 1972 में क्षेत्रीय विकास में विकास केन्द्रों की भूमिका का मूल्यांकन करते हुए मानवीय क्रियाकलापों का संष्लिष्ट रूप में अध्ययन किया है। विकास केन्द्र क्षेत्रीय विकास एवं सामाजिक न्याय के लिए आवष्यक अवस्थापनात्मक तत्वों की स्थिति को उचित कड़ियों में जोड़ने का प्रयास किया है। किसी भी क्षेत्र का सर्वागींण विकास उस क्षेत्र में पाये जाने वाले विकास केन्द्रों एवं स्थानीय संसाधनों के सम्यक उपयोग पर निर्भर रहता है। सेवाओं के समुचित वितरण हेतु ये केन्द्र स्थानीय जनसंख्यां को सुलभ कराने में आधारीय योगदान देते हैं तथा विकास स्तर को निर्धारित करते हैं, (पाण्डेय एवं पाण्डेय, 1990)[11] ।

संकल्पनात्मक रुप में किसी भी क्षेत्र का विकास वहां पाये जाने वाले केन्द्रों का परिणाम होता है, जो उस क्षेत्र के जनसंख्या हेतु प्रयुक्त किया जाता है। क्षेत्र का विकास विद्यमान सामाजिक–आर्थिक क्रियाओं का प्रतिफल है, जो क्षेत्र के सर्वागींण विकास में परिलक्षित होता है, जिसके कारण वहां के निवासियों का जीवन स्तर एवं उच्च कोटि के समाज के विकास, औद्योगिक क्रियाकलाप, अवस्थापनात्मक विकास को प्रभावित करता है। साथ ही साथ बेरोजगार जनसंख्या को रोजगार के अवसर उपलब्ध कराने में ये अन्तःप्रक्रियायें महत्वपूर्ण योगदान देती है (तिवारी, 1993)[12]। भारतीय सन्दर्भ में सेवा केन्द्र भी अधोमुखी प्रक्रिया द्वारा नवाचारों का प्रसार करते है। जहां तक सेवा केन्द्रों द्वारा विकास केन्द्रों की भांति आर्थिक विकास प्रक्रिया में रोजगार में वृद्धि का प्रष्न है तो ग्रामीण परिवेष में विभिन्न पदानुक्रम वर्ग में अपेक्षाकृत बड़े सेवा केन्द्र विकास केन्द्रों की तरह रोजगार में वृद्धि करते हैं। यह रोजगार में वृद्धि तीन तरह से हो सकती है–

1. **प्रत्यक्ष रोजगार–**यदि सेवा केन्द्र पर कोई उद्योग या अवस्थानात्मक कार्य विकसित है तो उसमें कुछ लोगों को प्रत्यक्ष रोजगार उपलब्ध होता है।

2. **अप्रत्यक्ष रोजगार–** केन्द्र पर प्रत्यक्ष रोजगार में लगे लोगों के लिए परिवहन एवं अन्य आवष्यक वस्तुओं के वितरण में लोग लगे रहते हैं।

3. **अभिप्रेरक रोजगार–** इस प्रक्रिया में ग्रामीण क्षेत्र के निवासी विभिन्न कार्य करने वाले लोगों की आवष्यकताओ की पूर्ति हेतु उत्पादन तन्त्र में परिवर्तन करके लाभ प्राप्त करते

Golden Research Thoughts
ISSN 2231-5063
Impact Factor : 2.2052 (UIF)
Volume-4 | Issue-5 | Nov-2014 Available online at www.aygrt.isrj.org

हैं। क्षेत्र सर्वांगीण विकास में सेवा केन्द्र की भूमिका परिपूरकता का कार्य करते हैं। समन्वित ग्रामीण विकास में विकास के स्तर वहां के निवासियों के जीवन स्तर में वृद्धि, रोजगार के अवसर, औद्योगिक उत्पादों की पूर्ति आदि सभी कार्यों का नियामक सेवा केन्द्र ही है। अतः सेवा केन्द्र कृषि विकास के साथ–साथ वहां द्वितीयक एवं तृतीयक क्रिया–कलापों का सम्पादन सेवा केन्द्रों के माध्यम से ही संभव है।

आर्थिक विकास के चर–विकास की संकल्पना बहुआयामी तथा बहुप्रखण्डीय है। भारत के संदर्भ में जहां ग्रामीण अर्थ तंत्र की प्रधानता है वहां ग्रामीण सामाजिक आर्थिक ढांचे में रूपान्तरण को ही ग्रामीण विकास माना जा सकता है। क्षेत्र मे समन्वित ग्रामीण विकास के लिए आर्थिक विकास के चरो की महत्वपूर्ण भूमिका होती है क्योकि किसी भी क्षेत्र के निवास करने वाली जनसंख्या उसके जीवन स्तर, आय के स्रोत आदि। आर्थिक क्रिया–कलापों के द्वारा ही संभव है। स्पष्ट है कि क्षेत्र के समन्वित ग्रामीण विकास हेतु चरों का चयन कर विकास प्रक्रिया को सुचारू रूप से नियोजित किया जा सकता है, आर्थिक विकास के चर निम्नवत है– बैंकिंग, संचार, परिवहन, औद्योगिक, एवं सहकारी समितियों की सेवाएं।

बैंकिंग सेवाएं– आधुनिक अर्थव्यवस्था में कृषि, उद्योग, व्यापार, वाणिज्य एवं परिवहन आदि का विकास बैंकिंग प्रणाली पर निर्भर करता है। बैंक प्रगति के सूचक बन गये हैं, जिन क्षेत्रों में बैंक नहीं होते हैं वे प्रायः आर्थिक दृष्टि से पिछड़े माने जाते हैं। बैंकों के विकास से क्षेत्र की आर्थिक स्थिति का अनुमान लगाया जा सकता है। क्षेत्र के बैंक सेवाओं के वितरण में असमानता पायी जाती है, जिसे तालिका संख्या 1.1 में प्रस्तुत किया गया है।

तालिका संख्या 1.1
गाजीपुर जनपद में सेवा केन्द्रों पर बैंक सेवाओं का विवरण

क्र.स.	**बैंकों के नाम**	**सेवा केन्द्रों की संख्या**
1	स्टेट बैंक आफ इण्डिया	4
2	सेन्ट्रल बैंक आफ इण्डिया	1
3	बैंक आफ बडौदा	1
4	बैंक आफ इण्डिया	1
5	अरबन बैंक	2
6	भूमि विकास बैंक	4
7	कोषागार एवं उपकोषागार	5

8	भारतीय जीवन बीमा निगम	3
9	सहकारी बैंक	22
10	यूनियन बैंक आफ इण्डिया	35
11	पंजाब नेशनल बैंक	3
12	इलाहाबाद बैंक	7

तलिका संख्या 1.1 से स्पष्ट है कि क्षेत्र के चयनित सेवा केन्द्रों पर बैंक सेवायें असमान रुप से पायी जाती है।

स्टेट बैंक आफ इण्डिया– क्षेत्र के चार सेवा केन्द्र गाजीपुर, सैदपुर, मुहम्मदाबाद एवं जमानियां में स्टेट बैंक है। ये सभी सेवा केन्द्र नगरीय सेवाओं से युक्त है। बैंक आफ बडौदा, बैक आफ इण्डिया एवं सेन्ट्रल बैंक आफ इण्डिया की सुविधाएं गाजीपुर सेवा केन्द्र में है। पंजाब नेषनल बैंक क्षेत्र के गाजीपुर एवं सैदपुर में, अरबन बैंक गाजीपुर एवं मुहम्मदाबाद सेवा केन्द्र पर तथा भारतीय जीवन बीमा निगम की सुविधाएं गाजीपुर, सैदपुर एवं मुहम्मदाबाद नगरीय सेवा केन्द्रों पर पायी जाती है।

इलाहाबाद बैंक– क्षेत्र के चयनित 7 सेवा केन्द्रों गाजीपुर, मुहम्मदाबाद, दिलदारनगर, दुल्लहपुर, बद्धोपुर, बेटावर एवं महेन्द में इलाहाबाद बैंक, गाजीपुर, सैदपुर, मुहम्मदाबाद एवं जमानियां में भूमि विकास बैंक की सेवाएं उपलब्ध हैं।

भूमि विकास बैंक–क्षेत्र के चयनित गाजीपुर, सैदपुर, मुहम्मदाबाद एवं जमानियां सेवा केन्द्रों पर तथा कोषागार एवं उपकोषागार तहसील मुख्यालय पर पाये जाते हैं।

सहकारी बैंक– क्षेत्र के चयनित 22 सेवा केन्द्रों गाजीपुर, जंगीपुर मरदह, रामपुरमांझा, नन्दगंज, सैदपुर, दुल्लहपुर, जखनियां, शादियाबाद हंसराजपुर, सादात, बहरियाबाद, बहादुरगंज, कासिमाबाद, करीमुद्दीनपुर एवं भांवरकोल आदि सेवा केन्द्रों पर सहकारी बैंक की शाखाएं पायी जाती हैं।

यूनियन बैंक आफ इण्डिया– क्षेत्र के चयनित 35 सेवा केन्द्रों गाजीपुर, सैदपुर, सादात, जमनियां, मुहम्मदाबाद, हंसराजपुर, नन्दगंज, विरनों, दिलदारनगर, मांटा, मलिकपुरा, हुरमुजपुर, जंगीपुर, बहादुगंज, रेवतीपुर, वासुपुर, नायकडीह, जखनियां, शादियाबाद, गंगौली, करीमुद्दीनपुर, महराजगंज, मरदह, करण्डा, वाराचवर कटघरा, गहमर, खालिषपुर, औडियार, सबुआ, कटरिया उपरवार, शाहवाजकुली, जलालाबाद, उसिया आदि सेवा केन्द्रों पर यूनियन बैंक आफ इण्डिया की शाखांए कार्यरत हैं। स्पष्ट है कि

Golden Research Thoughts
ISSN 2231-5063
Impact Factor : 2.2052 (UIF)
Volume-4 | Issue-5 | Nov-2014 Available online at www.aygrt.isrj.org

क्षेत्र के मात्र 40% सेवा केन्द्रों पर ही बैंक सेवाएं उपलब्ध हैं, जो क्षेत्र में विकासात्मक भूमिका का निर्वहन करती हैं।

संचार सेवाएं— वर्तमान तकनीकी युग में किसी भी क्षेत्र की कार्य क्षमता में वृद्धि के कारण ही संचार एवं डाकघर की आवष्यकता दिन प्रतिदिन बढ़ती जा रही है। आधुनिकीकरण की पहचान टेलीफोन एवं डाक सेवाओं के विकास से भी होती है। किसी भी क्षेत्र में संचार सुविधाओं का प्रसार आर्थिक विकास का सूचक होता है। इसलिए डाकघर एवं हर घर के सम्पन्न सेवा केन्द्र अपने क्षेत्रों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाते हैं (जया, 1997)[13]।

तारघर— क्षेत्र के सात सेवा केन्द्रों गाजीपुर, मुहम्मदाबाद, जमानियां, सैदपुर, सादात, दिलदारनगर एवं जंगीपुर में उपलब्ध है। तीन डाकघर की सेवाएं गाजीपुर सेवा केन्द्र में, दो डाकघर की सेवाएं मुहम्मदाबाद, गहमर, रेवतीपुर, शेरपुर जमानियां एवं सैदपुर में है। एक डाकघर की सेवाएं सभी केन्द्रों पर पायी जाती हैं, जिनमें प्रमुख सेवा केन्द्र सादात, दिलदारनगर, बहादुरगंज, करीमुद्दीनपुर, खानपुर, वाराचवर जखनियां, दुल्लहपुर, जलालाबाद, गंगौली, ताजपुरडेहमा, देवकली, नन्दगंज, विरनों, मरदह, सुहवल, भदौरा भांवरकोल, कासिमाबाद, नोनहरा, खालिषपुर, बहरियाबाद, फतेहअल्लाहपुर, भोजापुर, कुंडेसर, सिधौना एवं खानपुर आदि है। अन्य सेवा केन्द्रों पर उपडाकघर की सेवायें पायी जाती हैं।

सहकारी समिति सेवा केन्द्र— किसी भी क्षेत्र में सहकारी समितियां उस क्षेत्र के समन्वित ग्रामीण विकास में महत्वपूर्ण योगदान देती है। कृषि उत्पादन में वृद्धि, परिवहन साधनों के विकास हेतु रासायनिक उर्वरकों आदि के विकास के फलस्वरूप क्षेत्र का समन्वित विकास संभव है। समन्वित ग्रामीण विकास का आधार सहकारी समितियां होती है। क्षेत्र के सभी केन्द्रों पर सहकारी समितियों का वितरण असमान है, जिसे तालिका संख्या 1.2 में प्रस्तुत किया गया है।

तालिका संख्या 1.2
गाजीपुर जनपद में चयनित सेवा केन्द्रों पर सहकारी समितियों का विवरण

क्र.स.	**सहकारी समितियों के नाम**	**सेवा केन्द्रों की संख्या**
1	सब्जी मण्डी	5
2	कृषि मण्डी	4
3	सहकारी कृषि एवं ग्राम विकास शाखाएं	4

4	सहकारी बीज भण्डार	20
5	शीतगृह	13
6	सहकारी खाद समिति	70
7	गान्धी आश्रम	50
8	गैस एजेंसी	2
9	किरासन एजेंसी	6
10	पेटोल पम्प	20

सब्जी मण्डी– क्षेत्र के चयनित 5 सेवा केन्द्रों जंगीपुर, जमानियां, मुहम्मदाबाद, सादात एवं सैदपुर में सब्जी मण्डी पायी जाती है। यहां पर क्षेत्रीय कृषक सब्जी का उत्पादन कर एवं बेचकर ऊचित मूल्य प्राप्त करते हैं।

कृषि मण्डी– क्षेत्र के चयनित 4 सेवा केन्द्रों सैदपुर, जंगीपुर, मुहम्मदाबाद एवं जमानियां में कृषि मण्डी पायी जाती है। यहां पर क्षेत्र के सभी भागों से अनाज खरीद कर थोक विक्रेता लाते हैं और ऊचित लागत मूल्य पर बेचकर अच्छी आमदनी प्राप्त कर अपने जीवन स्तर को उंचा उठाते हैं।

सहकारी कृषि एवं ग्राम विकास शाखाएं– क्षेत्र के चयनित 4 सेवा केन्द्रों जंगीपुर, सैदपुर, मुहम्मदाबाद एवं जमानियां में ये सुविधाएं हैं जिससे कृषकों को कम दर पर ऋण की सुविधाएं सुलभ करायी जाती हैं।

किरासन एजेंसी– क्षेत्र के चयनित 6 सेवा केन्द्रों गाजीपुर, सैदपुर, जंगीपुर, मुहम्मदाबाद, जमानियां एवं सुहवल के किरासन एजेंसियों से पूरे क्षेत्र में किरासन उपलब्ध कराया जाता है।

गैस एजेंसी– क्षेत्र के चयनित नन्दगंज एवं गांजीपुर सेवा केन्द्र पर गैस एजेंसी है। यहां से सम्पूर्ण क्षेत्र में गैस का वितरण छोटे–छोटे केन्द्रों के माध्यम से ग्रामीणवासियों को सुलभ की जाती है।

पेट्रोल पम्प– क्षेत्र में परिवहन साधनों को सुचारू रूप से संचालित करने के लिए गाजीपुर, मुहम्मदाबाद, औडियार, जमानियां, कासिमाबाद, भदौरा, विरनों, सैदपुर, शादियाबाद, वहादुरगंज, भांवरकोल, जखनियां, नन्दगंज, देवकली, जलालाबाद, सादात, मनिहारी, मरदह, जंगीपुर, बाराचवर एवं दिलदारनगर में पेट्रोल पम्प हैं।

Golden Research Thoughts
ISSN 2231-5063
Impact Factor : 2.2052 (UIF)
Volume-4 | Issue-5 | Nov-2014 Available online at www.aygrt.isrj.org

सहकारी बीज भण्डार– क्षेत्र में फसल उत्पादन हेतु गाजीपुर, जंगीपुर, वद्धोपुर, भडंसर, कासिमाबाद, मुहम्मदाबाद, करीमुद्दीनपुर, देवकली, बासुपुर, सैदपुर, खानपुर, सौनाखास, जखनियां, सादात, माहपुर, जमानियां, भदौरा, दिलदारनगर, सुहवल एवं कासिमबाद में बीज भण्डार केन्द्र है।

खाद विक्रय केन्द्र– क्षेत्र के चयनित सभी बडे सेवा केन्द्रों पर किसान को उचित मूल्य पर खाद की सुविधाएं उपलब्ध करायी जाती हैं।

गांधी आश्रम– क्षेत्र के सैदपुर, सादात, जंगीपुर, मुहम्मदाबाद, गाजीपुर, जमानियां, बहादुरगंज, दिलदारनगर करीमुद्दीनपुर एवं गहमर आदि सेवा केन्द्रों पर गांधी आश्रम भण्डार केन्द्र पाये जाते हैं।

शीतगृह–क्षेत्र के जलालाबाद, हंसराजपुर, गाजीपुर, मुहम्मदाबाद, कासिमाबाद, शेरपुर, सैदपुर, भदौरा, दुल्लहपुर, जहुराबाद, जंगीपुर जमानियां, हंसराजपुर में शीत गृह है। यहां पर क्षेत्र के किसानों एवं व्यापारियों की सामानों को सुरक्षित रखने का प्रबन्ध किया गया है। स्पष्ट है कि सहकारी समितियां बडे सेवा केन्द्रों पर अधिक तथा छोटे सेवा केन्द्रों कम पायी जाती हैं, जिससे ग्रामीण विकास में समय–समय बाधाएं उत्पन्न होती रहती हैं।

औद्योगिक सेवा केन्द्र– किसी क्षेत्र के विकास में औद्योगिक केन्द्रों की महत्वपूर्ण भूमिका होती है। वर्तमान औद्योगीकरण किसी भी क्षेत्र की प्रगति एवं सम्पन्नता का केवल आधार ही नहीं बल्कि उसके आर्थिक विकास का मापदण्ड भी माना जाता है। यही कारण है कि आधुनिक युग औद्योगिकयुग का प्रतीक बन गया है। आज विष्व के अधिकांष अल्पविकसित राष्ट्र औद्योगिकरण के द्वारा अपने तीव्र आर्थिक विकास के लिए प्रयत्नषील हैं। इसी प्रकार अध्ययन क्षेत्र में सेवा केन्द्रों द्वारा औद्योगिक विकास कर यहॉ के बेरोजगार निवासियो को रोजगार का अवसर प्रदान कर समन्वित ग्रामीण विकास में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाहन कर रहे हैं। क्षेत्र के औद्योगिक सेवाओं का विवरण तालिका संख्या 1.3 में प्रस्तुत किया गया है।

तलिका संख्या 7.3
गाजीपुर जनपद में औद्योगिक सेवाओं का वितरण

क्र.स.	औद्योगिक संवायें	सेवा केन्द्रों की संख्या
1	इत्र कारखाना	1
2	अफीम कारखाना	1

3	खोवा मण्डी	1
4	रंग बनाने का कारखाना	1
5	हथकरघा उद्योग	25
6	वर्तन निर्माण उद्योग	1
7	शराब कारखाना	1
8	बीडी उद्योग	15
9	अगरबत्ती उद्योग	4
10	चीनी मिल	1

इत्र एवं गुलाल जल कारखाना–इत्र बनाने का कारखाना गाजीपुर सेवा केन्द्र पर हैं। यहां लोगों को रोजगार के अवसर उपलब्ध हैं।

अफीम कारखाना–गाजीपुर सेवा केन्द्र पर अफीम की खेती बडे पैमाने पर की जाती है, जिससे अफीम बनाया जाता है।

खोवा मण्डी– यहां दुग्ध का बडे पैमाने पर उत्पादन करके खोवा बनाया जाता है, जिसका विक्रय केन्द्र सैदपुर सेवा केन्द्र है। सैदपुर में रंग बनाने का कारखाना है जिसमें कुषल कारीगरों से रंग बनाकर अन्य राज्यों में भी रंग का निर्यात किया जाता है।

हथकरघा– मुस्लिम बहुल जनसंख्या वाले सेवा केन्द्रों यथा गहमर, मुहम्मदाबाद, जमानियां, सादात, बहादुरगंज, दिलदारनगर, खालिसपुर, शादियाबाद, जंगीपुर, वहरियाबाद, भितरी, फतेहअल्लाहपुर, अंधऊ, हंसराजपुर, जहुराबाद, बडेसर, रूहीपुर, नसरतपुर नायकडीह, दौलतपुर एवं कासिमाबाद में हथकरघा उद्योग से कपडों की बुनाई का कार्य किया जाता है।

बीडी–अगरबत्ती एवं वर्तन बनाने के उद्योग– सादात, भितरी, सैदपुर, मुहम्मदाबाद, शादियाबाद, बहरियाबार, खानपुर, मखदूमपुर, गहमर, जंगीपुर, दौलतपुर, नायकडीह, खालिसपुर, फतेहअल्लाहपुर एवं भीमापार आदि केन्द्रों पर बीड़ी तथा गाजीपुर सैदपुर, मुहम्मदाबाद एवं सादात में अगरबत्ती बनाने का कार्य किया जाता है। सादात एवं गाजीपुर सेवा केन्द्र पर एल्युमिनियम के वर्तन बनाने का कार्य किया जाता है।

शराब बनाने का कारखाना एवं चीनी मिल– क्षेत्र के नन्दगंज सेवा केन्द्र पर शराब बनाने का कारखाना स्थापित किया गया है। यहां पर इस उद्योग में निवासियों को

Golden Research Thoughts
ISSN 2231-5063
Impact Factor : 2.2052 (UIF)
Volume-4 | Issue-5 | Nov-2014 Available online at www.aygrt.isrj.org

रोजगार के अवसर उपलब्ध हो जाते हैं जिससे उनका जीवन स्तर उंचा उठता है। चीनी मिल कारखाना नन्दगंज सेवा केन्द्र पर हैं जो आर्थिक तंगी के कारण अभी बन्द है।

परिवहन के सेवा केन्द्र– आधुनिक युग में सत्त विकास प्रक्रिया के उत्प्रेरक तत्वों मे परिवहन सर्वाधिक महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करता है। विकसित परिवहन ग्रामीण एवं नगरीय केन्द्रों को जोड़कर दोनो क्षेत्रों की परिपूरकता में वृद्धि करता है। परिणामस्वरूप आर्थिक वृद्धि की प्रसार प्रक्रिया तीव्र गति से चलती रहती हैं। अतः किसी भी क्षेत्र का सामाजिक–आर्थिक विकास परिवहन अभिगम्यता पर आधारित होता है। इसलिए आर्थिक प्रक्रिया के रूपान्तरण में परिवहन की महती भूमिका होती है। क्षेत्र में परिवहन केन्द्रों पर विकसित परिवहन सुविधाओं के विकास से क्षेत्र का संतुलित विकास संभव है। क्षेत्र में रेल एवं सड़क परिवहन की महत्वपूर्ण भूमिका क्षेत्रीय विकास में सहायक सिद्ध है।

रेल परिवहन की सेवाएं–औड़ियार, सैदपुर, नन्दगंज, गाजीपुर, शाहबाजकुली, मुहम्मदाबाद करीमुद्दीनपुर, ताजपुरडेहमा, माहपुर, सादात, हुरमुजपुर, जखनियां, दुल्लहपुर, नायकडीह, दिलदारनगर, उसिया जमानियां, भदौरा, गहमर, वारा एवं खानपुर आदि सेवा केन्द्रों पर रेल परिवहन की सुविधाएं पायी जाती हैं।

सड़क यातायात– चार बस एवं टैक्सी स्टैण्ड की सुविधाएं गाजीपुर सेवा केन्द्र पर उपलब्ध है जो जनपद मुख्यालय एवं प्रमुख प्रषासनिक केन्द्र है। यह क्षेत्र के सभी केन्द्रों से सड़क मार्ग जाल द्वारा सम्बद्ध है। तीन बस एवं टैक्सी स्टैण्ड की सेवायें सैदपुर, जमानियां एवं मुहम्मदाबाद आदि सेवा केन्द्रों पर उपलब्ध है। ये सभी सेवा केन्द्र नगरीय एवं प्रषासनिक केन्द्र हैं। दो बस एवं टैक्सी स्टैण्ड की सेवाएं 18 सेवा केन्द्रों गहमर, रेवतीपुर, बहादुगंज सादात, सेवराई, दिलदारनगर, जंगीपुर, देवकली, नन्दगंज, जखनियां, दुल्लहपुर, कासिमाबाद, बहरियाबाद, शादियाबाद, औड़ियार, हंसराजपुर, करीमुद्दीनपुर, गंगौली आदि सेवा केन्द्रों पर सुविधाएं उपलब्ध हैं। दो से कम बस एवं टैक्सी स्टैण्ड की सेवायें क्षेत्र के कुछ सेवा केन्द्रों पर परिवहन की सुविधाएं उपलब्ध हैं। यहां सभी सेवा केन्द्रों को जोड़ने वाली छोटी–बड़ी सड़कें परिवहन के रुप प्रयुक्त होकर ग्रामीण विकास को प्रोत्साहित करती है। इसके अन्तर्गत प्रमुख केन्द्र भितरी, धुवार्जुन, ताजपुरडेहमा, गंगौली, असावर, मटेहू, मरदह, भदौरा, वाराचवर, भावरकोल, गांधीनगर, विरनों आदि सेवा केन्द्र है। स्पष्ट है कि जिन सेवा केन्द्रों पर परिवहन की यह सुविधाएं उपलब्ध नहीं है वे सेवा केन्द्र सड़क परिवहन द्वारा आपस में एक दुसरे से जुड़े हुए हैं जिनके माध्यम से ग्रामीण विकास का क्रियाकलाप सम्पादित होता रहता है।

Golden Research Thoughts
ISSN 2231-5063
Impact Factor : 2.2052 (UIF)
Volume-4 | Issue-5 | Nov-2014 Available online at www.aygrt.isrj.org

स्पष्ट है कि आर्थिक विकास के सेवा केन्द्रों द्वारा क्षेत्र में आर्थिक विकास का ढांचा व्यक्तियों का जीवन स्तर रहन–सहन कृषि कार्य एवं गौण आर्थिक क्रियाकलाप सम्पन्न होते हैं और क्षेत्र के सर्वांगीण विकास में आर्थिक विकास के सेवा केन्द्रों की आधारीय भूमिका होती हैं। सेवा केन्द्र क्षेत्र के सर्वागीण विकास में महत्वपूर्ण भूमिका का निर्वाह करते हैं। स्पष्ट है कि पदानुक्रमिक वर्ग के सभी सेवा केन्द्र अपने अनुरूप ही क्षेत्र में सेवाएं प्रदान करते हैं तथा सामाजिक–आर्थिक विकास का आधारीय ढांचा तैयार करते हैं।

समन्वित ग्रामीण विकास में आर्थिक सेवाओं की भूमिका– क्षेत्र के समन्वित सामाजिक विकास हेतु आर्थिक सेवाओं की महत्वपूर्ण भूमिका होती है इसलिए आर्थिक सेवाओं को प्रदान करने हेतु बैक संचार सहकारी समितियां औद्योगिक एवं परिवहन आदि चरों का अंकमान ज्ञात कर उनका Z.Score ज्ञात किया गया है, जिसका परास 0 से 2.38 धनात्मक एवं 0 से 0.95 ऋणात्मक है, जो तालिका संख्या 1.4 में प्रदर्षित है।

तालिका संख्या 1.4

गाजीपुर जनपद में विकासखण्डानुसार आर्थिक सेवाओं का विवरण स्तर

क्र. सं	Z.Score	विकास स्तर	विकासखण्डों की संख्या	%	सेवा केन्द्रों की सख्या	%
1	> 1.50	अति उच्च	3	18.75	27	20.3
2	0.75-1.50	उच्च	1	6.25	7	5.26
3	0-0.75	मध्यम उच्च	1	6.25	7	5.26
4	0- -0.75	मध्यम	5	31.25	42	31.58
5	>-0.75	मध्यम न्यून	6	37.50	50	37.59

वितरण प्रतिरुप– तालिका संख्या 1.4 एवं चित्र संख्या 7.1A से स्पष्ट है कि आर्थिक सेवाओं की भूमिका विकासखण्डानुसार 5 वर्गों में विभक्त करके अध्ययन किया गया है, जिसकी सम्पूर्ण जनसंख्या 3037582 एवं सम्पूर्ण सेवाओं को ग्रहण करने वाले कुल सेवा केन्द्रों की संख्या 2665 है। प्रत्येक सेवाओं पर 410 व्यक्ति आश्रित हैं।

Golden Research Thoughts
ISSN 2231-5063
Impact Factor : 2.2052 (UIF)
Volume-4 | Issue-5 | Nov-2014 Available online at www.aygrt.isrj.org

अति उच्च स्तरीय भूमिका– इसके अन्तर्गत आर्थिक सेवाओं को प्रदान करने वाले तीन विकासखण्ड गाजीपुर, सैदपुर एवं मुहम्मदाबाद है, जिसकी स्थिति पष्चिमी एवं मध्यवर्ती भाग में है, जिनका अंकमान 898.99, 772.51 एवं 685.53 है। इस वर्ग के कुल सेवा केन्द्रों की संख्या 27 एवं जनसंख्या 250016 है। यहां प्रत्येक आर्थिक सेवाओं पर 392 व्यक्ति आश्रित हैं। ये नगरीय सुविधाओं एवं प्रषानिक सेवाओं के अतिरिक्त परिवहन सेवाओं के केन्द्र है।

उच्चस्तरीय भूमिका– इस वर्ग के अन्तर्गत जमानियां विकासखण्ड सम्मिलित है, जिसकी स्थिति दक्षिणी भाग में है, जिसका अंकमान 497.32 एवं जनसंख्या 65921 है। इसके अन्तर्गत 7 सेवा केन्द्र एवं प्रत्येक आर्थिक सेवाओं पर 421 व्यक्ति आश्रित हैं।

मध्यम उच्च स्तरीय भूमिका– इसके अन्तर्गत विरनों विकासखण्ड की आर्थिक सेवाओं को सम्मिलित किया गया है, जिसकी स्थिति उत्तरी भाग में है, जिसका अंकमान 362.51 है। इस वर्ग में सेवा केन्द्रों के संख्या 7 जिसकी जनसंख्या 37630 है। प्रत्येक आर्थिक सेवाओं पर 436 व्यक्ति आश्रित है।

मध्यम स्तरीय भूमिका– इसके अन्तर्गत 5 विकासखण्ड भदौरा, सादात, जखनियां, कासिमाबाद, एवं रेवतीपुर है, जिनकी स्थिति दक्षिणी पूर्वी एवं उत्तरी पष्चिमी तथा उत्तरी भाग में है, जिनका अंकमान क्रमषः 278.03, 261.8, 227.61, 215.11 एवं 209.53 है। इस वर्ग में सेवा केन्द्रों की संख्या 42 एवं जनसंख्या 278104 है। प्रत्येक समन्वित सेवाओं पर 462 व्यक्ति आश्रित है।

मध्यम न्यून भूमिका– इस वर्ग के अन्तर्गत 6 विकासखण्ड देवकली, वाराचवर, भांवरकोल, मनिहारी, करण्डा एवं मरदह है, जिनकी स्थिति पष्चिमी उत्तरी पूर्वी एवं पूर्वी भाग में है, जिनका अंकमान क्रमषः 163.92, 148.19, 109.74, 99.42, 97.11 एवं 85.92 है। इस वर्ग में सेवा केन्द्रों की संख्या 50 एवं जनसंख्या 195159 है। प्रत्येक समन्वित सेवाओं पर 482 व्यक्ति आश्रित हैं।

समन्वित ग्रामीण विकास में विकासखण्ड अनुसार आर्थिक सेवाओं की भूमिका– क्षेत्र के समन्वित ग्रामीण विकास हेतु आर्थिक सेवाओं के भूमिका को नकारा नहीं जा सकता है इसलिए यहां की आर्थिक सेवाओं को विकास खण्ड अनुसार अंकमान ज्ञात कर उनका Z.Score प्राप्त किया गया है, जिसका परास 0 से 2.04 धनात्मक एवं 0 से 1.23 ऋणात्मक है जिसे तालिका संख्या 7.5 में प्रस्तुत किया गया है।

Golden Research Thoughts
ISSN 2231-5063
Impact Factor : 2.2052 (UIF)
Volume-4 | Issue-5 | Nov-2014 Available online at www.aygrt.isrj.org

तालिका संख्या 7.5
गाजीपुर जनपद में विकासखण्डानुसार आर्थिक सेवाओं का वितरण स्तर

क्र.सं.	Z. Score	विकास स्तर	विकासखण्डों की संख्या	%
1.	> 1.50	अति उच्च	2	12.50
2.	0.75-1.50	उच्च	2	12.50
3.	0-0.75	मध्यम उच्च	1	6.25
4.	0- -0.75	मध्यम	6	37.50
5.	>-0.75	मध्यम न्यून	5	31.25

वितरण प्रतिरूप– तालिका संख्या 1.5 एवं चित्र संख्या 1.1B से स्पष्ट है कि विकासखण्डानुसार आर्थिक सेवाओं को 5 वर्गों में विभक्त कर अध्ययन किया गया है, जिसकी सम्पूर्ण जनसंख्या 3037582 एवं सम्पूर्ण सेवाओं को ग्रहण करने वाले कुल सेवा केन्द्रों की संख्या 2665 है। प्रत्येक सेवाओं पर 987 व्यक्ति आश्रित हैं।

अति उच्च स्तरीय भूमिका– इस वर्ग के अन्तर्गत दो विकासखण्ड मुहमदाबाद एवं गाजीपुर है, जिसकी स्थिति मध्यवर्ती भाग में है, जिसका अंकमान क्रमषः 1039.09 एवं 1035.30 है। इस वर्ग में आर्थिक सेवाओं को ग्रहण करने वाले कुल सेवा केन्द्रों की संख्या 399 है, जिसकी जनसंख्या 492449 है। प्रत्येक आर्थिक सेवाओं पर 934 व्यक्ति आश्रित हैं।

उच्चस्तरीय भूमिका– इसके अन्तर्गत दो विकास खण्ड जमानिया एवं सैदपुर है, जिसकी स्थिति क्षेत्र के दक्षिणी एवं पष्चिमी भाग में है, जिनका अंकमान क्रमषः 879.43 एवं 832. 10 है। इस वर्ग में आर्थिक सेवाओं को ग्रहण करने वाले कुल सेवा केन्द्रों की संख्या 380 है जिनकी जनसंख्या 469290 है। प्रत्येक समन्वित सेवाओं पर 956 व्यक्ति आश्रित हैं।

मध्यम उच्च स्तरीय भूमिका– इसके अन्तर्गत विरनों विकासखण्ड की आर्थिक सेवाओं को सम्मिलित किया गया है, जिसकी स्थिति उत्तरी भाग में है, जिसका अंकमान 717 है। इस वर्ग में आर्थिक सेवाओं को ग्रहण करने वाले सेवा केन्द्रों की संख्या 134 एवं जनसंख्या 145886 है। प्रत्येक आर्थिक सेवाओं पर 989 व्यक्ति आश्रित हैं।

मध्यम स्तरीय भूमिका– इसके अन्तर्गत 6 विकासखण्ड कासिमाबाद, देवकली, भदौरा, जखनियां, सादात एवं वाराचवर है, जिसकी स्थिति उत्तरी एवं उत्तरी पष्चिमी भाग में है,

Golden Research Thoughts
ISSN 2231-5063
Impact Factor : 2.2052 (UIF)
Volume-4 | Issue-5 | Nov-2014 Available online at www.aygrt.isrj.org

जिनका अंकमान क्रमषः 521.38, 508.82, 498.41, 484.67, 465.44 एवं 432.06 है। इस वर्ग में आर्थिक सेवाओं को ग्रहण करने वाले कुल सेवा केन्द्रों की संख्या 1117 है जिनकी कुल जनसंख्या 1149372 है। प्रत्येक आर्थिक सेवाओं पर 1014 व्यक्ति आश्रित है।

मध्यम न्यून भूमिका– इसके अन्तर्गत 5 विकासखण्ड मनिहारी, मरदह, करण्डा, रेवतीपुर एवं भांवरकोल है, जिसकी स्थिति क्षेत्र के उत्तरी एवं दक्षिणी भाग में है, जिसका अंकमान क्रमषः 62.3, 342.42, 336.64, 334.29 एवं 266.02 है। इस वर्ग में आर्थिक सेवाओं को ग्रहण करने वाले सेवा केन्द्रों की संख्या 635 है, जिसकी जनसंख्या 781185 है। प्रत्येक आर्थिक सेवाओं पर 1031 व्यक्ति आश्रित हैं।

सेवा केन्द्र एवं विकासखण्ड अनुसार आर्थिक सेवाओं का तुलनात्मक अध्ययन– स्पष्ट है कि अतिउच्च सेवाओं को प्रदान करने वाले सेवा केन्द्र गाजीपुर, सैदपुर, मुहम्मदाबाद है, जिनकी स्थिति मध्यवर्ती एवं पष्चिमी भाग में है। यह सेवा केन्द्र नगरीय एवं प्रमुख प्रषासनिक केन्द्र होने के कारण आर्थिक विकास में अतिउच्च स्तर के है, जबकि विकासखण्डानुसार आर्थिक सेवाओं की अधिकता के कारण मुहम्मदाबाद एवं गाजीपुर विकासखण्ड अतिउच्च स्तर की आर्थिक सेवायें अपने क्षेत्र में प्रदान करते है। इसी प्रकार उच्च स्तर के आर्थिक सेवाओं का मात्र एक सेवा केन्द्र जमानियां जो औद्यागिक विकास के स्तर में अतिउच्च है जिसकी स्थिति क्षेत्र के दक्षिणी भाग में है। परन्तु विकासखण्डानुसार आर्थिक सेवाओं के सैदपुर एवं जमानियां विकासखण्ड है जहां पर रंग बनाने के कारखाने, खोआ मण्डी एवं जमानियां अतिउच्च स्तर का औद्योगिक केन्द्र है। मध्यम–उच्च स्तर आर्थिक सेवाओं का केन्द्र एवं विकासखण्ड अनुसार आर्थिक सेवाओं का केन्द्र विरनों है। यहां आर्थिक विकास मध्यम स्तर का है। मध्यम स्तर के आर्थिक सेवाओं के केन्द्र क्षेत्र के भदौरा, सादात, जखनियां, कासिमाबाद एवं रेवतीपुर है, जो प्रमुख वृहद स्तर के सेवा केन्द्रों से युक्त है लेकिन जनसंख्या के अनुसार आर्थिक विकास कम है जबकि विकासखण्ड अनुसार आर्थिक सेवाएं देवकली, भदौरा, कासिमाबाद, जखनियां, सादात वाराचवर में देखने को मिलता है, जो मध्यम स्तर की आर्थिक सेवायें प्रदान करता है। इन दोनों में काफी समानता है। मध्यम–न्यून स्तर के आर्थिक सेवा केन्द्रों के अन्तर्गत क्षेत्र के देवकली, वाराचवर, भावरकोल, मनिहारी, करण्डा एवं मरदह है जहां पर छोटे–छोटे सेवा केन्द्र पाये जाते है जहां पर आर्थिक विकास की सेवायें बहुत कम पायी जाती है। आर्थिक सेवाओं के विकासखण्ड मरदह, मनिहारी, करण्डा, रेवतीपुर एवं भावरकोल है। यहां पर भी आर्थिक विकास की सेवाएं कम होने के कारण इस वर्ग में काफी समानता है।

Golden Research Thoughts
ISSN 2231-5063
Impact Factor : 2.2052 (UIF)
Volume-4 | Issue-5 | Nov-2014 Available online at www.aygrt.isrj.org

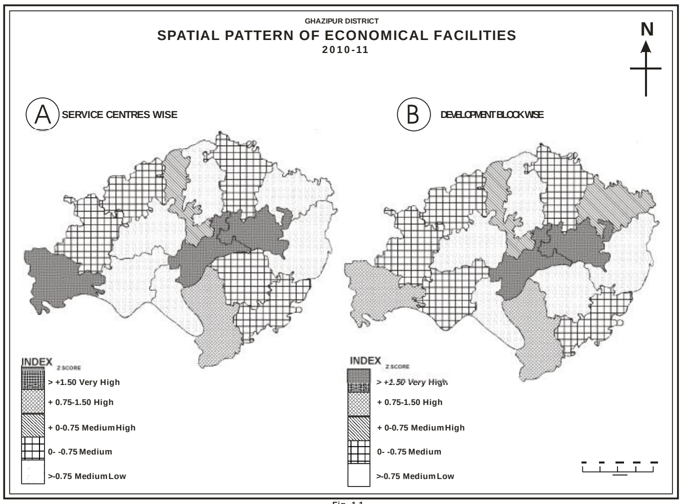

Fig- 1.1

REFERENCES

1. Pandey, J. N. (1985): A Strategy for Rural Development in V.K. Srivastav Commercial Ativities and Rural Development in South Asia P.P 441-444.
2. तिवारी,रेखा (1998): प्रतापगढ़ तहसील में केन्द्र स्थल एवं क्षेत्रीय अन्तः प्रक्रियायें 'उ. भा.भू.प. अंक 34 संख्या 12 पृष्ठ संख्या 87–99
3. Mishra R.P. (1971): Growth Pole and Growth Centres in Urban and Regional Planning in India Development Studies No.2 University of Mysore P.No 19.
4. Singh S.P. (1997): Intregrated Rural Development Programme I.R.D.P. Expatation and Achievements A Case Study of development Block Sultanpur District, U.P. India NGJI Vol No. 43 part 1 March pp. 58– 69.
5. Ullman, E.L. (1954): Geography as Spatial Interaction Annals A.A.G. at VIII P.P 283-284
6. सिंह, प्रियंका (2007): कुषीनगर जनपद में ग्रामीण सेवा केन्द्र एवं लघुस्तरीय नियोजन उ.भा.भू.प. पृष्ठ संख्या 99–104 ।
7. Yadav,A.K.. (2008): Service Centres and Integrated Rural Development: A Case Study of Ghazipur District Unpublished Ph.D.Thesis D.D.U.Gorakhpur University Gorakhpur pp.103-135
8. Sen., L.K.(1971): Planning Rural Growth Centers for Integrated Area Development A study in Miralguda Toluca National Institute of Community Development Hyderabad
9. Sunderum K.V. (1972): Service Centres and Community of Interest Area: A Case Study of Rural Delhi Mishra R.P. et (eds) Urban System and Rural Development Part 1 Mysore pp.23-35.

Golden Research Thoughts
ISSN 2231-5063
Impact Factor : 2.2052 (UIF)
Volume-4 | Issue-5 | Nov-2014 Available online at www.aygrt.isrj.org

10. Chandra Shekhar, C. S. Mathur G.D. and Sunderam, K.V. (1972): The Role of Growth Foci in Regional Development Strategy in Mishra, R.P et (eds) Urban System and Rural Development Part 1 Mysore pp. 36-70.
11. Pandey J.N. & Pandey Rekha (1990): Spatial Organization of Socio-Economic Facilities in Pratapgarh District, I.G.U. Symposium Gorakhpur.
12. Tiwari, Rekha (1993): Socio–Economic Facilities and Economic Development in Pratapgarh Tehsil, XV, I.G.U. Bhubaneswar.
13. जया अरुण (1997): ग्रामीण विकास में संचार माध्यमों की भूमिका पूर्वी उत्तर प्रदेष का एक प्रतीक अध्ययन अप्रकाषित षोध प्रबंध दी.द.उ. गोरखपुर विष्वविद्यालय गोरखपुर पेज सं. 209–227 ।